और सुमरूं खेड़े को भुइयाँ ऊजड़ खेड़ा दिया बसाई ॥१॥
रामचन्द्र जी ने ऐसा सुमिरूं लंका करी चढ़ाई।
लंकापति रावण ने सुमरूं रामचन्द्र जी सिया हरलाई ॥२॥
मेघनाथ ने ऐसो सुमरूं शक्ती बान चलाई।
बाल जती लछमन ने सुमरूं मार लियो मेघनाथ बलदाई ॥३॥
पांचों तो पांडवां ने सुमरूं जिन की करी सहाई।
हनूमान जोधा ने सुमरूं ठोक पीट बाकी लंका जराई ॥४॥
तुलसी दास भजो भगवाना हरि चरणन चित लाई।
विभीषण ने ऐसो सूमरूं लंका को राज दियो रघुराई ॥५॥

१२६

जाहि लगन लागी घनस्याम की।
धरत कहूं पग पर परत हैं कितहूं, भूल जाय सुधि धाम की॥
छवि निहार नहिं रहत सार कछु, घरि पल निसिदिन जामकी
जित मुंह उठै तितै ही धावै, सुरत न छाया घाम की॥
अस्तुति निंदा करौ भलै ही, मेड़ तजी कुल गाम की।
नारायन बौरी भई डोलै, रही न काहू काम की॥

१२७

मोहन बसि गयो मेरे मन में।
लोक लाज कुल कानि छूटि गई, याकी नेह लगन में ॥१॥
जित देखों तितही वह दीखै, घर बाहर आंगन में।
अंग अंग प्रति रोम रोम में, छाइ रह्यो सारे तन में ॥२॥
कुण्डल झलक कपोलन सोहै, बाजूबन्द भुजन में ॥३॥